# ।। सत्त भेष को अंग ।।

## मारवाडी + हिन्दी

## ( १–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

## || अथ सत्त भेष को अंग लिखंते ||

**सुण रे पिंडत ग्यान सब मेरा || तत्त शब्द ले राखुं ||**
**तेरी बात मोंहि तन मांही || भांत भांत ले भाखुं ||१||**

अरे पंडीत,तुने शरीर पे जैसे भेष धारण कर रखा है वैसेही मैने शरीर के अंदर तत्तशब्द का भेष धारण किया है । तेरा भेष शरीर के बाहर है व मेरा भेष तन के माही । वह भेष कैसा है यह मै तुझे भिन्न प्रकार से बताता हुँ वह तु सुण ।।।१।।

**त्तपस्या करूं तत्त कण लियां || ओर हिरदे नही धारूं ||**
**समत्ता शीळ साच गेहे बेठा || बेदा दूर नीवारूं ||२||**

तु संसार त्यागकर तपस्या करता तो मैने तत्त धारण कर त्रिगुणी माया त्यागा । मै तत्त वैराग्य छोड्कर कोई माया के कर्म कांड हृदय मे नही धारण करता । तुने समता,सिल,परमात्मा पे विश्वास धारण किया वैसे तत्त शब्द मेरे घटमे समता,सिल व परमात्मापे विश्वास कुद्रती प्रगट किया । विषमता,व्यभीचार,मै–मैं यह जैसे तुने विकार समजकर दुर किये वे बाते तत्तशब्द मेरे घटमे आने ही नही देता ।।।२।।

**ऊजळ दसा हँस के चाले || बोलू बेण पियारा ||**
**अेसा ग्यान करूं ऊजियागर || माया ब्रम्ह नियारा ||३||**

तु जैसे शरीर से ऊजले आचार रखता वैसे तत्तशब्द मेरे हंसके उजले आचार रखता । तु सबसे मीठा बोलता वैसा तत्तशब्द मेरे घटमे मीठे वचन निकालता । तू जगत को वेदोको ज्ञान उजागर करता तो मै जगतको ब्रम्ह का ज्ञान उजागर करना व माया मे जम कैसा है व सतस्वरुप ब्रम्ह जमसे न्यारा कैसा है यह माया व ब्रम्ह का फरक बताता ।।।३।।

**ना काहुँ से हेत दोस्ती || बेर भाव नही राखूं ||**
**बुज्यां सकळ भ्रम ले तोडूं || आद अंत ले भाखूं ||४||**

तेरी जैसे किसीसे दोस्ती नही,या किसीसे बैर नही ऐसेही मेरी किसीसे दोस्ती नही या वैर नही । मुझे तत्तशब्द के कारण सभी मेरे सरीखे जीवब्रम्ह दिखते । कोई भी माया है पद नही दिखता । इसलिये मुझे ज्ञान पुछने पे मै सभी के माया मे तृप्त सुख मिलेंगे यह भ्रम तोड्ता । माया कैसे मृतक है इसलिये तृप्त सुख देनेके लिये असमर्थ है व सतस्वरुप ब्रम्ह कैसे अमर है व सदा तृप्त देने के लिये समर्थ है यह भांती भांती से आद से लेकर अंततक बताता ।।।४।।

**अेको ब्रम्ह सकळ मे ब्यापक || दुतिया भाव न जाणू ||**
**पांच भूत की सकळ आतमा || ज्यां त्यां ब्रम्ह पिछाणू ||५||**

तु जैसे सभी मे एकही ब्रम्ह व्यापक है । ब्रम्ह के शिवाय दुजा कोई व्यापक नही है यह भाव रखता । वैसेही मै तत्तब्रम्ह शब्द से सभी मे एक तत्तब्रम्ह कैसे है व तत्तब्रम्ह के शिवाय दुजा कोई व्यापक नही है यह अरुबरु देखता । तू पांचो भूतो के आत्मा को देह न

मानते जीव ब्रम्ह पहचाणता वैसे मुझे भी तत्त शब्द पांचो भूतोके आत्माको देह न दिखाते जीवब्रम्ह दिखाता ।५।

**पूरण ज्ञान परे पद पाया ।। भ्रम क्रम सब भागा ।।**
**मिटगी रेण भया ऊजीयारा ।। अगम अगोचर जागा ।।६।।**

मैने पारब्रम्ह होणकाल के पुर्ण ज्ञान के परे का सतस्वरुप ज्ञान पद पाया । इस ग्यान से माया सच्चा सुख देनेवाली है यह भ्रम तथा मायाके कर्मोमे तृप्त सुख मिलेंगे यह समज भाग गओ । इसकारण मेरी युगानयुग से छायी हुओ अज्ञान रुपी अंधेरी रात मिट गओ व मुझमे सतज्ञान का प्रकाश हो गया । मुझे अगम याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती आदि किसीको मालूम नही व अगोचर याने चर्म चक्षुओसे दिखता नही ऐसे सतस्वरुप ब्रम्ह की जगह मुझे मिली ।।।६।।

**क्रिया ध्रम क्रम सब छाडया ।। चोका चित्त दिराऊँ ।।**
**भाव भजन की करी रसोई ।। नित पत अेसे पाऊँ ।।७।।**

हे पंडीत तुने जैसे निच क्रिया,धर्म व कर्म त्यागे वैसे मैने काल के मुख मे ले जानेवाले,क्रिया कर्म,धर्म त्यागे । तू रसोई करता वहाँ चौका देता वैसे मैने चित्त मे विकारो को साफ करने का चौका दिया तू जैसे रसोई करता वैसे मैने भजन भाव की रसोई बनाता । ऐसी मै भजन भाव की रसोई नित्य पाता ।।।७।।

**च्यारूं बेद भेद मे बाच्या ।। अेसा जिग रचाया ।।**
**पाँच पचीस सकळ ले झूँक्या ।। पाछे जीव जीवाया ।।८।।**

तू जैसे चारो वेद भेद बाचता वैसे मैने भी चारो वेद,भेद बाचे । तू जैसे चारो वेद भेद मे के यज्ञ करता वैसे मैने भी तत्तशब्द मे बताया हुआ यज्ञ रचाया । तू यज्ञ मे अनाज,घी आदि झोकता वैसे मैने भी पांच विषय आत्मा व पंचविस विषय प्रकृतीयाँ अग्नीकुंड मे झोकी व सिर्फ जीव को जीवाया ।।।८।।

**अेसा जिग करूं मे भारी ।। नित पत करूं सँपाडा ।।**
**निर्मळ नीर अधर में झूलुं ।। गिगन म्हेल घर झाडा ।।९।।**

जैसे अश्वमेघ यज्ञ मे घोडा मारकर हवन करते है ऐसा मैने भी पांच विषय आत्मा व पंचविस विषय प्रकृतीया यज्ञ मे हवन कर मार दी ऐसा भारी यज्ञ मैने किया । तू जैसे नित्य प्रती स्नान करता वैसे मै गंगा,यमूना,सरस्वती के निर्मल पाणी मे त्रिगुटी मे स्नान करता । तू जैसे तेरा महल झाडता वैसे मैने गिगन मंडल मे मेरा महल झाडा ।।।९।।

**डंड कमंडल क्रिया हम कीनी ।। निर्मळ नीर भराया ।।**
**धोती ध्यान अधर सो सूके ।। न्हाय धोय घर आया ।।१०।।**

जैसे तू डंड कमडंल मे मे निर्मल पाणी भरता वैसे मै निर्मल ग्यान का डंड कमडल रखता । जैसे तेरी धोती आकाश मे अधर सुकती वैसे मेरा ध्यान आकाश मे अधर रहता । जैसे तू

नहा धोकर घर आता वैसे मै कर्मो के किट को साफ कर सतस्वरुप गीगन घर आया ।।।१०।।

**बिन बेराग बात नही मांनू ।। र रे म मे बिन कांई ।।**
**त्यागूं सकळ अेक गेह राखूं ।। सत्त सब्द मन मांई ।।११।।**

जैसे तू गृहस्थी जीवन की बात नही मानता,वैराग्य मे रहना सही समजता वैसे मै सतवैराग्य के शिवाय त्रिगुणी माया के कर्म कांडो की बात नही मानता । जैसे तू माया के शुभ करणीयो बिना कोई अशुभ करणीया नही मानता वैसे मै राम नाम के शिवाय कोई त्रिगुणी माया की क्रिया कर्म नही मानता । जैसे तूने कुटुंब परिवार त्याग कर एक वैराग्य धारण कर लीया वैसे मैने त्रिगुणी माया त्याग कर सतशब्द मन मे पकड रखा हुँ ।।।११।।

**अेसा तरक त्याग मे राखूं ।। चव डे कहुँ बजाई ।।**
**काम क्रोध अहँकार मद रे ।। छोडी जक्त सगाई ।।१२।।**

मै ऐसी चतुराई त्याग मे रखता हुँ वह सभी को चवडे बजाकर कहता हुँ । तूने मनसे जैसे संसार से काम,क्रोध,अहंकार,मद यह सगाई त्यागी वैसे तत्तशब्दने मेरे जीवका काम,क्रोध, अहंकार,मद खतम् कर दिया ।।।१२।।

**तामस तरक रीस सब त्यागी ।। में तें मान उडाया ।।**
**लालच लोभ चाय कूं तजरे ।। यूं सुखमाय समाया ।।१३।।**

तुने जैसे तामस,तरक,रीस,मै,तु,मान बडाई त्यागी वैसे तत्तशब्द ने मेरा तामस,तरक,रीस, मै तु,मान बडाई खतम् कर दी ।।।१३।।

**सैजें रहूँ जक्त के मांहि ।। सोच फिकर नही मेरे ।।**
**ऊपजे खपे हाण नही जोखा ।। मोहो आण नही घेरे ।।१४।।**

तू जैसे जगत मे मन से सहज रहता कोई सोच फिकीर नही रखता वैसे मै तत्त के भरोसे सहज रहता,काल की कोई सोच फिकीर नही रखता । जैसे तुने लालच,लोभ,चाय त्यागा वैसे मेरा भी लालच,लोभ,चाहना सत्तशब्द ने मार डाला । इसप्रकार से मै सुख के अंदर समाया । जैसे तुझे हानी या जोखीम इसकी चिंता फिक्र नही रहती वैसे मेरी काल की चिंता फिकीर सतशब्द ने मार दी । जैसे तुझे पत्नी,पुत्र का मोह नही घेरता वैसे मुझे माया के करणीयो का मोह नही घेरता ।।।१४।।

**अेसा त्याग नित पत मेरा ।। सांई सरण निभावे ।।**
**जाणे जीव पीव सो पेला ।। दूजा भेव न आवे ।।१५।।**

ऐसा मेरा सभी त्याग तेरे त्याग समान है । यह मेरा त्याग साई आपके शरण मे रखकर निभायेगा । मै मेरे जीव से भी अधीक परमात्मा मालीक को जाणता । जीव खुद से अधिक परमात्मा को जाणणे मे दुसरा भेव याने जरासी भी कसर नही रखता ।।।१५।।

**सामी पणो सेंग हे मेरे ।। भिन भिन भेद बताऊँ ।।**

**भस्मी अंग ध्यान मे चोंडु ।। कपडा पेम रंगाऊँ ।।१६।।**

साधुपणा मुझमे तेरे समान सभी है । उसका भिन्न भिन्न तरहसे भेद बताता हुँ । साधु शरीरपर जैसे राख लगाना है वैसे सतशब्दके ध्यान की राख मै घटमे लगाता । साधू कपडे रंगाता तो मै साहेब के प्रेम मे रंग जाता ।।।१६।।

**पासूं प्रित फिट कडी लाई ।। गेरूँ ज्ञान करिजे ।।**
**कुंडो नाभ सुरत ले गाळु ।। चादर चित्त रंगीजे ।।१७।।**

साधु लोक कपडा रंगाने समय रंग पक्का बनानेके लिअे फिटकरीका पानी देते वैसे मै साहेब के रंगमे पक्का रंगनेके लिअे प्रितीका पानी देता हुँ । साधू लोक गेरुके रंगमे कपडे रंगवाते है वैसे मै ग्यानरुपी गेरुमे रंग गया । साधु कुंडीमे डालकर कपडेको दबाते तो मै नाभी रुपी कुंडीमे सुरत लगाता हुँ । साधु लोक चांदर रंगते है तो मै चित्तके चादरको ग्यानसे रंगता हुँ ।।।१७।।

**तूम्बी तत्त ज्ञान की हाते ।। मांय ब्रम्ह जळ भरीया ।।**
**पीवत नीर छिकूंनी कोई ।। सास ऊसासे जरीया ।।१८।।**

साधु के हात मे तुम्बी रहती है तो मेरे हात मे तत्तज्ञान की तुंबी है । उनके तुम्बी मे निर्मल जल भरा है तो मेरे तत्तज्ञान के तुम्बी मे ब्रम्हज्ञान रुपी जल भरा है । साधू तुम्बी का जल तोरी से पीते है तो मै सांस उसास के जरीअे ब्रम्हजल पिता हुँ ।।।१।।

**माथे जटा जुक्त री बांधी ।। लिव लंगोट लगाई ।।**
**गोळा हात भेद का लिया ।। अणभे अलख जगाई ।।१९।।**

साधु माथेपे जटा रखते है तो मै सरपे सतशब्द के युक्ती की जटा बांधा हुँ । साधुओ ने लंगोट बाधी है तो मैने सतशब्द से लिव लगाई है यह मेरी सतशब्द से लिव मेरा लंगोट का काम कर रही है । साधू लोक शरीर पे लगाने के लिअे भस्म का गोला रखते है तो मै सतशब्द के भेद का गोला रखता हुँ । साधू रिध्दी सिध्दी जगाते तो मैने कालके परे के भय रहीत अणभे देश का लखने मे नही आता ऐसा अलख जगाया ।।।१९।।

**धुणी ध्यान सिखर मे तापुं ।। सुरत पावडी चोलुं ।।**
**जाडो काळ ठंड सब भागी ।। पवना संग ले बोलुं ।।२०।।**

साधु लोक धुनी तापते है तो मै दसवेद्वारके सिखरमे ध्यान तापता हुँ । साधू लोक पादुकापर चलते है तो मै सुरत इस पादुकासे चलता हुँ । साधुलोक साधनाके लिअे थंडी,गर्मी,बरसात को भगा देते याने फिकीर नही करते ऐसा मै भजन करने बैठने मे थंडी,गर्मी,बरसात नही रखता, सब भगा देता । साधु शंख से श्वास फुकंकर बोलते तो मै पवनसे दसवेद्वार मे अखंडीत धुन बोलता ।।।२०।।

**पांच पचीस चार मिल तीनुं ।। आ जमात चलाई ।।**
**त्रीबेणी तट जाय संपा डे ।। कियो ब्होत जुध भाई ।।२१।।**

साधुओकी जमात रहती अैसे मेरे साथ भी पांच इन्द्रीये पंचविस प्रकृतीयाँ चार मन चित्त बुध्दी अहंकार व रजोगुण,तमोगुण,सतोगुण ये तीन गुण अैसी जमात त्रिवेणी संगम प्रयाग मे स्नान करने के लिअे साधुओमे तक्रार हो जाती,युध्द होते,तलवारे चलती वैसे मैने भी त्रिवेणी संगम पे बहुत युध्द किया ।।।२१।।

**लडीया बोहोत भेष सब खिरीयो ।। मेंत रहयो शिर थाणे ।।**
**लागी प्रित अलख सुं यारी ।। भली जुक्त सुख माणे ।।२२।।**

ये साधू आपस मे बहोत लढाई करते,उसमे हजारो साधू,गोस्वामी व बैरागी मारे जाते वैसे मैने भी बहोत युध्द किया उसमे पांच इन्द्रीये,पंचविस प्रकृतीयाँ तीन गुण ये सभी मर गअे । इस भारी लढाईमे अनेक भेषी साधु मारे जाते व महंत अड्डेपर रहनेसे बच जाता मेरे पांच इन्द्रीअे, पंचविस प्रकृती व तीन गुण सभी मर जाते व जीव महंत बच जाता व मेरे जीव की प्रिती अलख सू लगती व उससे दोस्ती हो जाती ।।।२२।।

**मिलीया जाय सरस सामी सूं ।। बाहीर क्या दिखलावे ।।**
**जन सुखराम भेष ये पेरया ।। प्रेम प्रित लिव लावे ।।२३।।**

मै श्रेष्ठ स्वामी को मिला । अब मै इन वेषधारीयो के समान साधु बननेका बाहर का वेष क्यो पहनु । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते वेषधारी साधुओको बताते है कि अैसा वेष मैने धारण किया । इस भेष से मुझे साहेब से प्रेम,प्रित व लिव लग गअी ।।।२३।।

**जोगी जुक्त जोय में भाखूं ।। अेसा भेष बणाया ।।**
**मुद्रा कान मन की घालूं ।। अनहद नाद बजाया ।।२४।।**

जोगीयो की भेष युक्ती देखकर मै मेरा भेष ततशब्द का कैसा है यह भाखा । मैने योगी जैसे कानमे मुद्रा पहनते है अैसी योगीयोके समान मन की मुद्रा कान मे पहनी । साधु अनहद नाद बजाते वैसे मेरे घटमे अनहद नाद बज रहा ।।।२४।।

**सेली सांच सत्त की सिंगी ।। आदर भाव आदेसू ।।**
**टोपी सीस तत्त की मेलूं ।। बांधू प्रित बदे सूं ।।२५।।**

नाथ लोक सेली याने काली डोरी गलेमे बांधते है अैसे विश्वास की सेली मैने गले मे बांधी है । नाथ लोक सिंगी बजाते तो मेरे घटमे तत्तकी सिंगी बज रही है । आदर भाव आदेसू । साधुलोक मस्तक पर टोपी रखते है तो मै तत्तब्रम्ह की टोपी मस्तक पे रखता हुँ । साधू लोक शरीर धारी देवता से प्रिती करते है तो मै बिना घडे हुअे,बिना शरीर के देवता से प्रिती करता हुँ ।।।२५।।

**सातूं द्विप फिरूं गुर सरणे ।। नव खंड मार चेताया ।।**
**भिक्षा भजन शब्द प्रसादी ।। पाय ब्होत सुख आया ।।२६।।**

साधु खंड मे सातो द्विप नऊ खंड व सब को चेताते वैसे मै भी पिंड मे सातो द्विपमे व नऊ

खंड फिरता व रोम रोम चेताता । साधु जगतमे भोजन प्रसादीकी भिक्षा मांगते तो मै जगत से भजन प्रसादीकी भिक्षा मांगता हुँ । भक्तोसे यह भजन प्रसादी पाकर मै बहोत सुखी होता ।।।२६।।

**जोडी जतन खडाऊ क्षिम्या ।। आड बंध पत पूरा ।।**
**जुग सो भ्रम त्याग हम दीया ।। बसूं गिगन घर दूरा ।।२७।।**

साधू खडाऊ पहनते तो मै क्षमा की खडाऊ पहनता । साधू आड बंध पहनते तो मै तत्त के धर्म का पत रखनेका आड्बंध पहना हुँ । साधु जगत को त्यागते तो मैने भ्रम को त्यागा । साधू घर से दुर पहाड्पर रहते तो मै जीव का कंठ घर छुड्वाकर उसे गीगन घर मे रखता ।।।२७।।

**प्याला सुख पेम रस पीऊँ ।। आसण पवन बंधाया ।।**
**धुणी जाय अधर घर तापूं ।। तांहाँ बोहोत सुख आया ।।२८।।**

साधू लोक सोमरस पिते तो मै प्रेम रस पिता । साधू लोक जमीन से उपर आसन बांधते तो मै स्वास के उपर दसवेद्वार मे आसन किया । साधू धुणी लगाकर देह तपाते तो मैने सतशब्द की ध्वनी लगाकर दसवेद्वार मे तपता हुँ । वहाँ मुझे बहोत सुख आते है ।।।२८।।

दोहा ।।

**आसण बंध्यो सिखर मे ।। जहाँ आयस, अलख, अतीत ।।**
**जन सुखदेव जोगी भया ।। अेसी ऊद बुद रीत ।।२९।।**

मेरा आसन दसवेद्वारके सिखरमे बांधा है वहाँ मुझे आयस याने सतस्वरुपी योगीनाथ सतस्वरुपी अलख सतस्वरुपी के दर्शन हुअे । अतीत याने जीसे तीथीयोमे उम्र नही है अैसे अतीत आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले अैसी मेरी जोगी बननेकी जगत के भेषीयो से अलग अद्भुत रित है ।।।२९।।

**ऊट बेठ सब रीत सूं ।। हाल चाल ब्हो हार ।।**
**मन जाण्यो सुखराम जी ।। अेको ब्रम्ह विचार ।।३०।।**

मेरे उठने,बैठने,हालचाल व सभी व्यवहार से सभी मे एक अखंडीत ब्रम्ह है यह मेरा मन समजा अैसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।३०।।

**।। इति सत भेष को अंग संपूरण ।।**